UNIT-II(d) Teaching of spellings

भाषा के जो भिन्न-भिन्न अंग हैं; जैसे—बोलना व पढ़ना, उनकी अपेक्षा लेखन का कार्य कठिन है, क्योंकि लिखते समय हाथ की माँसपेशियों के सन्तुलन की आवश्यकता पड़ती है। जिस बालक ने केवल पढ़ना ही सीखा है, उसमें अभी इस सन्तुलन का अभाव होता है।

ठीक-ठाक लिखने के लिए यह आवश्यक है कि बालक अक्षरों की आकृति का भली प्रकार से निरीक्षण करें और फिर वैसे ही अक्षर लिख सकने में समर्थ हों। बालकों की पाठशालाओं में जो भिन्न-भिन्न प्रकार की क्रियायें होती हैं, उनका एक प्रयोजन यह भी होता है कि बालकों के भिन्न-भिन्न अंगों की माँसपेशियों में सन्तुलन स्थापित किया जाये।

माँसपेशियों में सन्तुलन स्थापित होने के पश्चात् ही बालकों को लिखने के लिए प्रेरित किया जा सकता है। इसके अनुसार प्रत्येक बालक अपने विचार के आधार पर ही लिखना प्रारम्भ करेगा, न कि आयु के आधार पर। हमने प्रायः देखा है कि यदि किसी शिशु के हाथ में चॉक या पेन्सिल आदि पड़ जाये तो वह दीवार पर या फर्श पर आड़ी-तिरछी रेखायें खींचकर लिखने का प्रयास करता है। छोटे बालक की इस प्रवृत्ति का लाभ, लिखना सिखाने में भी लिया जा सकता है। हम लिखना सिखाने से पहले बालकों से इसी प्रकार की रेखायें खिंचवायेंगे।

अशुद्ध वर्तनी के कारण

डॉ. भोलानाथ तिवारी के अनुसार अक्षर-विन्यास सम्बन्धी अशुद्धियों के निम्नलिखित कारण हो सकते हैं—

(1) लेखन की असावधानी—अक्षर-विन्यास सम्बन्धी अधिकांश त्रुटियाँ लेखन की असावधानी और शीघ्रता के कारण होती हैं; उदाहरणस्वरूप, शिरो-रेखा खींचते समय थोड़ी-सी असावधानी 'भ' को 'म' या 'म' को 'भ' बना देती है। इसी असावधानी या शीघ्रता के कारण ही 'ड' को 'इ' तथा 'इ' को 'ड' लिख लिया जाता है।

(2) मात्राओं का अपर्याप्त ज्ञान—यदि छात्र प्रारम्भ में मात्रायें सीखते समय ध्यान नहीं देते, तो मात्रा सम्बन्धी अशुद्धियाँ भी हो जाती हैं। 'रश्मि' को 'रश्मी' तथा 'बबूल' को 'बबुल' लिख जाते हैं।

(3) व्याकरण का अधूरा ज्ञान—हिन्दी व्याकरण के नियमों का पूरा-पूरा ज्ञान न होने पर भी कभी-कभी बालक अक्षर-विन्यास सम्बन्धी अशुद्धियाँ करते हैं; उदाहरणस्वरूप, हिन्दी व्याकरण का एक नियम है कि—"जो संज्ञायें इकारान्त या उकारान्त होती हैं, उनके बहुवचन में क्रमशः 'ई' की मात्रा के स्थान पर 'इ' की मात्रा और 'ऊ' की मात्रा के स्थान पर 'उ' की मात्रा लगायी जाती है। इस नियम का ज्ञान न होने पर छात्र 'बाबुओं' के स्थान पर 'बाबूओं' और 'क्यारियों' के स्थान पर 'क्यारीयों' लिख जाते हैं।

(4) अशुद्ध उच्चारण—बालकों की वर्तनी की अशुद्धियों का एक कारण उनके द्वारा किये जाने वाला अशुद्ध उच्चारण भी हो सकता है। इस अशुद्ध उच्चारण के कारण ही वे 'गुप्त' को 'गुप्ता' लिख देते हैं।

(5) संशोधन के अभ्यास का अभाव—अध्यापक छात्रों के लिखित कार्य का संशोधन करते समय, उनकी जिन अशुद्धियों को चिह्नित करता है, छात्र उन्हें शुद्ध रूप में लिखने का अभ्यास नहीं करते और अशुद्ध रूप में ही लिखते रहते हैं।

(6) अध्यापक द्वारा मार्गदर्शन का अभाव—कई बार यह भी देखा गया है कि छात्र के लेखों आदि को देखते समय अध्यापक उनकी अक्षर-विन्यास सम्बन्धी अशुद्धियों की ओर ध्यान नहीं देते और न ही उन्हें चिह्नित करते हैं। इसका परिणाम यह निकलता है कि बालकों को अपनी अशुद्धियों का ज्ञान नहीं हो पाता और उन्हें अशुद्ध लिखने का अभ्यास हो जाता है।

(7) सांवेगिक तत्व—कभी-कभी बालक का मन अशान्त होता है, अथवा वह आवेश में होता है, ऐसी स्थिति में वह वर्तनी सम्बन्धी भूलें कर सकता है।

(8) बुद्धि की न्यूनता—जिन बालकों की बुद्धिलब्धि कम होती है, उनकी धारण, प्रत्यास्मरण तथा प्रत्यभिज्ञान शक्ति भी न्यून होती है। इसलिए वे अधिक समय तक शब्दों को अपने मस्तिष्क में नहीं रख पाते। यदि शब्द का अक्षर-विन्यास समझ भी लेते हैं तो भी उसे स्मरण नहीं रख पाते। पढ़े हुए शब्दों को लिखते समय वे इन शब्दों का प्रत्यक्षीकरण नहीं कर पाते, इसलिए वे प्रायः वर्तनी या अक्षर-विन्यास सम्बन्धी भूलें करते रहते हैं।

हिन्दी में वर्तनी सम्बन्धी अशुद्धियाँ

हिन्दी भाषा में अक्षर-विन्यास सम्बन्धी अशुद्धियाँ निम्न प्रकार पाई जाती हैं—

(1) मात्रा सम्बन्धी अशुद्धियाँ—छात्र लिखने में मात्राओं की निम्न अशुद्धियाँ करते हैं—

(क) मात्राओं का लोप—कई बार छात्र मात्राओं को लगाना भूल जाते हैं, यथा—मधर (मधुर), मालन (मालिन), जामन (जामुन) आदि।

(ख) स्थान परिवर्तन—कभी-कभी विद्यार्थी गलत स्थान पर भी मात्रा लगा देते हैं, यथा—सुसराल (ससुराल), पश्चिम (पश्चिम), परणित (परिणत) आदि।

(ग) अनावश्यक मात्राएँ—छात्र प्रायः अनावश्यक रूप में भी मात्रायें लगा देते हैं, यथा—प्रदर्शिनी (प्रदर्शनी) आदि।

(घ) **अशुद्ध मात्राएँ**—विद्यार्थियों द्वारा अशुद्ध मात्रा लगाने की भूलें भी यथेष्ट मात्रा में हो जाती हैं, यथा—मधूर (मधुर), कवी (कवि), कुरुप (कुरूप), इमली (अमली) आदि।

(च) **'ए' तथा 'ऐ' की अशुद्धियाँ**—'ए' तथा 'ऐ' के लिखने में कुछ छात्र-छात्रायें लिए, किए, चाहिए आदि शब्दों को लिऐ, किऐ, चाहिऐ लिख देते हैं। यह अशुद्ध प्रयोग है।

(छ) **'ऋ' तथा 'रि' की अशुद्धियाँ**—'ऋ' अक्षर का प्रयोग केवल संस्कृत से लिए गये तत्सम् शब्दों में ही होता है और कहीं नहीं। इस सम्बन्ध में छात्र-छात्रायें जो भूलें करते हैं, उनका निराकरण केवल अभ्यास द्वारा ही हो सकता है। 'ऋ' का प्रयोग शब्द के आदि में, मध्य में तथा अन्त में होता है, जैसे—ऋण, मातृ-भूमि, पितृ-भूमि आदि।

(ज) **'ई' और 'यी' की अशुद्धियाँ**—हिन्दी में 'ई' तथा 'यी' का ही प्रयोग प्रचलित है, जैसे—'खायी' की अपेक्षा 'खाई' अधिक शुद्ध है। ऐसे न होने पर लोग 'भाई' को 'भायी' तथा 'राई' को 'रायी' लिखना प्रारम्भ कर दें।

(झ) **'आ' तथा 'वा' की अशुद्धियाँ**—'ई' तथा 'यी' के समान 'आ' तथा 'वा' का प्रयोग भी दोनों प्रकार से होता है 'हुआ'—'हुवा'। इस सम्बन्ध में हमारा मत है कि 'आ' का प्रयोग ही शुद्ध है। हमें 'हुआ' लिखना चाहिए न कि 'हुवा'। इस प्रकार 'खावेगा' के स्थान पर 'खायेगां' का प्रयोग करना चाहिए।

(2) **वर्णों की अशुद्धियाँ**—प्रायः विद्यार्थी वर्ण सम्बन्धी अशुद्धियाँ भी करते हैं। वर्ण सम्बन्धी अशुद्धियाँ निम्न प्रकार की पाई जाती हैं—

(क) **अनावश्यक वर्ण**—कई बार विद्यार्थी अनावश्यक वर्ण अपनी ओर से लगा देते हैं, यथा—जैस्सा (जैसा), तुम्हने (तुमने), आत्ता (आता), असम्भ (असम्भव) आदि।

(ख) **वर्णों का लोप**—कभी-कभी छात्र किसी वर्ण को छोड़ देते हैं, यथा—उद्देय (उद्देश्य), अध्यन (अध्ययन), कुता (कुत्ता) आदि।

(ग) **स्थान परिवर्तन**—कई बार बालक वर्ण को अपने स्थान पर न लिखकर दूसरे स्थान पर लिख देते हैं, यथा—विषेश (विशेष), वीभस्स (वीभत्स), काचू (चाकू) आदि।

(घ) **आधे के स्थान पर पूरा तथा पूरे के स्थान पर आधा वर्ण लिखना**—कई बार यह देखा गया है कि विद्यार्थी शब्द में आधे वर्ण के स्थान पर पूरे वर्ण तथा पूर्ण वर्ण के स्थान पर आधा वर्ण लिखने की अशुद्धियाँ भी करते हैं, यथा—मर्ता है (मरता है), परकाश (प्रकाश), परसिद्ध (प्रसिद्ध) आदि।

(ङ) **सदृश वर्ण की अशुद्धियाँ**—जिन वर्णों में परस्पर सादृश्य पाया जाता है उनमें भी बालक गलतियाँ करते हैं, यथा—सिव (शिव), मुशीबत (मुसीबत), मनुस्य (मनुष्य), विशय (विषय), कृश्ण (कृष्ण), म्रग (मृग), रितु (ऋतु), बंदना (वंदना), बनाये (बनाए), गयी (गई) आदि।

(च) **पंचम वर्ण की अशुद्धियाँ**—बहुत-से विद्यार्थी पंचम वर्ण की भी अशुद्धियाँ करते हैं, यथा—दन्ड (दण्ड), चन्चल (चञ्चल), दंत (दन्त) आदि।

(छ) **रेफ की अशुद्धियाँ**—छात्रों में रेफ की अशुद्धियाँ दो प्रकार की पाई जाती हैं—

(i) रेफ के स्थान पर 'र' लिखना, यथा—परवत (पर्वत), करम (कर्म), मरद (मर्द) आदि।

(ii) रेफ को यथास्थान न लगाकर आगे-पीछे लगा देना, यथा—गदर्न (गर्दन), अर्हिमदन (अहिमर्दन) आदि।

(3) बिन्दु की अशुद्धियाँ—छात्र बिन्दु की अशुद्धियाँ भी बहुत करते हैं। बिन्दु की अशुद्धियाँ तीन प्रकार की होती हैं—

(क) बिन्दु का लोप—अर्थात् जहाँ बिन्दु की आवश्यकता है, वहाँ बिन्दु नहीं लगाया जाता; यथा—पढना (पढ़ना), गिर पडा (गिर पड़ा), काढना (काढ़ना) आदि।

(ख) स्थान परिवर्तन—कई बार उपयुक्त स्थान पर बिन्दु न लगाकर अन्य स्थान पर लगा दिया जाता है; यथा—सतं (संत) आदि।

(ग) अनावश्यक बिन्दु—कभी-कभी छात्र आवश्यकता न होने पर भी बिन्दु लगा देते हैं, यथा—ड़ाली (डाली), ड़लिया (डलिया) आदि।

(4) अनुस्वार और अनुनासिक सम्बन्धी अशुद्धियाँ—अनुस्वार (बिन्दु) के स्थान पर अनुनासिक (चन्द्रबिन्दु) और अनुनासिक के स्थान पर अनुस्वार लगाने की अशुद्धियाँ भी छात्र करते हैं, यथा—आंख (आँख), हंसी (हँसी) आदि।

अनुस्वार के सम्बन्ध में निम्नलिखित नियमों पर ध्यान देना चाहिए—

(i) लघु अक्षरों पर अनुस्वार लगाने से वे गुरु हो जाते हैं, यथा—कंस, प्रशंसा आदि।

(ii) अर्द्ध चन्द्र लगाने पर अक्षर लघु का लघु बना रहता है, यथा—हँस, अँगुली।

(iii) अनुस्वार के सामने जिस वर्ग का वर्ण आये, अनुस्वार उसी वर्ग के पाँचवें अक्षर में बदल जाता है, यथा—मंदा शब्द में 'द' त वर्ग का अक्षर है और इस वर्ग का पाँचवाँ अक्षर 'न' है। अतः 'मंदा' के स्थान पर 'मन्दा' हो सकता है 'मण्दा' नहीं। इसी प्रकार 'डण्डा' में 'ड' ट वर्गीय होने से संयुक्त होने पर 'डण्डा' होगा, 'डन्डा' नहीं।

(iv) यदि अनुस्वार के बाद 'य', 'ल', 'व', 'श', 'ष', 'स' आये तो वहाँ अनुस्वार का संयुक्ताक्षर नहीं बनना चाहिए, यथा—'संयम' को 'सण्यम' या 'सन्यम' लिखना भूल है। ऐसे ही 'संशोधन' को 'सन्शोधन' लिखना भी अशुद्ध है।

(5) विसर्ग सम्बन्धी अशुद्धियाँ—जिन शब्दों के मध्य या अन्त में विसर्ग लगाना चाहिए वहाँ प्रायः छात्र विसर्ग नहीं लगाते, यथा—दुख (दुःख), अधपतन (अधःपतन), अन्तसाक्ष्य (अन्तःसाक्ष्य), प्राय (प्रायः) आदि।

(6) शिरो रेखा सम्बन्धी अशुद्धियाँ—हिन्दी में 'भ' और 'म' का अन्तर शिरो रेखा द्वारा जाना जाता है। बालकों द्वारा किञ्चित भी असावधानी से 'भ' के स्थान पर 'म' और 'म' के स्थान पर 'भ' पढ़ा जाता है, यथा—मूख (भूख), मेड़ (भेड़), भाला (माला) आदि।

(7) 'श' तथा 'ष' की अशुद्धियाँ—अधिकांश छात्रों में 'श', 'ष' की अशुद्धियाँ पाई जाती हैं। निम्नलिखित नियमों की ओर ध्यान देने से इन अशुद्धियों का निराकरण किया जा सकता है—

(i) जिन तत्सम् शब्दों की संस्कृत (मूल) धातुओं में 'ष' का प्रयोग होता है, उनके हिन्दी शब्दों में भी 'ष' का प्रयोग होता है; जैसे—

शिष्—शिष्य, शेष, शिष्ट आदि।

रुष्—रुष्ट, रोष आदि।

पुष्—पोषक, पुष्प, पुष्ट आदि।

(ii) क, च, ट, ठ, प, फ के पूर्व यदि विसर्ग हो तो सन्धि करने पर विसर्ग का 'ष' हो जाता है; यथा—

निः + कपट = निष्कपट
निः + काम = निष्काम
निः + ठा = निष्ठा
निः + फल = निष्फल

(iii) वाष्प, पुरुष, भाषा, वृषभ, कृष्ण, पुष्प आदि शब्दों में भी 'ष' का प्रयोग होता है। इस प्रकार के प्रयोगों का ज्ञान अभ्यास के द्वारा ही हो सकता है।

(iv) संस्कृत तथा हिन्दी के तत्सम् शब्दों में 'च' और 'छ' से पूर्व 'श' आता है; यथा—
निश्छल, निश्चित, दुश्चरित्र आदि।

(v) 'ग' के साथ 'श' का प्रयोग किया जाता है, परन्तु तद्भव शब्दों में 'ख' का प्रयोग भी हुआ है, यथा—
तत्सम्—वर्षा
तद्भव—बरखा
सन्त कवियों ने प्रायः 'ष' के स्थान पर 'ख' का प्रयोग किया है।
गुरु गोविन्द सिंह ने कहा है—

''मैं हूँ परम पुरुख को दासा।
देखन आयो जगत तमासा।।''

यहाँ पर 'परम पुरुष' के स्थान पर 'परम पुरुख' शब्द का प्रयोग हुआ है, परन्तु आजकल खड़ी बोली में 'ष' का ही प्रयोग होता है।

(9) 'क्ष' और 'छ' की अशुद्धियाँ—यह पहले बताया जा चुका है कि 'क' और 'ष' मिलकर 'क्ष' बनता है। इसके प्रयोग का ज्ञान अभ्यास के द्वारा ही हो सकता है।
हिन्दी की बोलियों में 'ख' के स्थान पर 'छ' का प्रयोग हुआ है, यथा—
(i) लक्ष्मण के स्थान पर 'लछमन'।
(ii) 'क्षमा' के स्थान पर 'छमा'।
(छमा बड़न को चाहिए, छोटन को उत्पात)
(iii) 'प्रत्यक्ष' के स्थान पर 'प्रत्यच्छ'।
परन्तु आजकल की खड़ी बोली में 'क्ष' का ही प्रयोग होता है।

(10) 'ब' और 'व' की अशुद्धियाँ—ये अशुद्धियाँ भी छात्र-छात्राओं में बहुत पायी जाती हैं। इन अशुद्धियों का एक कारण यह भी है कि साधारण बोलचाल में शुद्ध शब्दों का प्रयोग नहीं होता। साधारण लोग 'वनवास' को 'बनवास' कहते हैं। बंगला भाषी लोग भी ये अशुद्धियाँ बहुत करते हैं। उनकी वर्णमाला में 'व' नहीं है। वे 'व' के स्थान पर 'ब' का ही प्रयोग करते हैं, यथा—
(i) केशव देव = केशब देब
(ii) कानन देवी = कानन देबी
(iii) देवी चौधरानी = देबी चौधरानी
संस्कृत के अधिकांश शब्दों में 'ब' का प्रयोग न होकर 'व' का प्रयोग होता है। शब्दों में अशुद्धियाँ इस प्रकार की होती हैं, यथा—
वन = बन
विकराल = बिकराल
विनाश = बिनाश
वह = बह
कहीं-कहीं 'ब' के स्थान पर 'व' का प्रयोग भी कर लिया जाता है, यथा—
बकरी (वकरी), बाँध (बाँध)।

(11) 'र' सम्बन्धी अशुद्धियाँ—बहुधा ऐसा देखा गया है कि कोई बालक तथा बालिका 'र' तथा 'रेफ' में अन्तर नहीं समझते। पंजाबी लोगों में यह गलती अधिक पायी जाती है। पंजाबी भाषा में 'रेफ' का प्रयोग नहीं होता। वहाँ पर 'धर्म' को 'धरम' तथा 'कर्म' को 'करम' कहा जाता है। यदि शब्द की ध्वनि पर ध्यान दिया जाये तो गलती दूर हो सकती है।

'र' अक्षर 'र्' और 'अ' के संयोग से बना है। यदि 'र' में से 'अ' का लोप कर दिया जाये तो रेफ बन जाता है। रेफ का प्रयोग जिस अक्षर के साथ होता है, वह उससे आगे वाले अक्षर के ऊपर चढ़ जाता है, यथा—मर्म, कर्म, धर्म, चर्म आदि।

कहीं-कहीं पर रेफ का प्रयोग अक्षर के नीचे भी किया जाता है, यथा—चक्र, वक्र, क्रय, ग्राम, ट्राम, ड्रम आदि।

(12) 'स' की अशुद्धियाँ—ये अशुद्धियाँ दो प्रकार की होती हैं—

(i) आधे 'स' से पूर्व 'अ' या 'ई' का प्रयोग करना, यथा—

स्नान—अस्नान　　स्त्री—इस्त्री

(ii) आधे ('स्') के स्थान पर पूरे 'स' का प्रयोग करना, यथा—

रास्ता—रासता　　बिस्तर—बिसतर

थोड़ी-सी सावधानी रखने पर ये अशुद्धियाँ दूर हो सकती हैं।

(13) विदेशी शब्दों का प्रयोग—विदेशी शब्दों के प्रयोग में मूल तत्सम् शब्द के स्थान पर उनका तद्भव रूप ही लेना चाहिए, यथा—

लैण्टर्न—लालटेन　　बॉटल—बोतल

(14) एक वर्ग के अक्षरों का प्रयोग—जहाँ पर एक ही वर्ग के अक्षरों का संयोग होता है, वहाँ पर केवल उस वर्ग के प्रथम और तृतीय का ही संयोग हो सकता है, द्वितीय और चतुर्थ का नहीं, यथा—खट्टा, सुग्गा, हक्का-बक्का आदि।

(15) 'ए' और 'ये' की अशुद्धियाँ—आज हिन्दी में 'ए' तथा 'वे' के प्रयोग के सम्बन्ध में काफी गड़बड़ है। इससे मुद्रणालय में मुद्रायोजकों (Compositors) को बहुत कठिनाई का सामना करना पड़ता है। कई शब्दों में तो इन दोनों अक्षरों का प्रयोग होता है, यथा—चाहिए, चाहिये; लिए, लिये; रुपए, रुपये।

इस सम्बन्ध में कई विद्वानों का कथन है कि बहुवचन के रूप में 'ये' का तथा अव्यय के रूप में 'ए' का प्रयोग किया जाए। हमारे विचार में दोनों ही प्रयोग शुद्ध हैं। आजकल 'ए' का प्रयोग अधिक होने लगा है। लिखने वालों को चाहिए कि वह अपने लेख में एक प्रकार के अक्षर का ही प्रयोग करें।

लिंग की अशुद्धियाँ

हिन्दी में लिंग सम्बन्धी अशुद्धियाँ उन व्यक्तियों द्वारा होती हैं, जो अहिन्दी भाषी प्रदेशों से सम्बन्ध रखते हैं। हिन्दी भाषी विद्यार्थी ये अशुद्धियाँ नहीं करते। ऐसी कुछ अशुद्धियों और कुछ शब्दों में उदाहरण नीचे दिये जा रहे हैं—

अशुद्धि	शुद्ध शब्द	अशुद्धि	शुद्ध शब्द
बुद्धिमान महिला	बुद्धिमती महिला	गुणवान बालिका	गुणवती बालिका
विद्वान छात्रा	विदुषी छात्रा	प्रतिभाशाली रानी	प्रतिभाशालिनी रानी

वचन की अशुद्धियाँ

वचन सम्बन्धी अशुद्धियों के निराकरण के लिए निम्नलिखित नियम हैं—

(i) आकारान्त शब्दों के अन्त में स्वर का प्रयोग करना चाहिए, यथा—

महिला—महिलाएँ	कन्या—कन्याएँ
पताका—पताकाएँ	छात्रा—छात्राएँ

(ii) ईकारान्त शब्दों के अन्त में 'य' का प्रयोग करना चाहिए, यथा—

झण्डी—झण्डियाँ	बेटी—बेटियाँ
लाठी—लाठियाँ	घाटी—घाटियाँ

(iii) उकारान्त तथा ऊकारान्त शब्दों के अन्त में स्वर का प्रयोग करना चाहिए, यथा—

आलू—आलुओं	गऊ—गउओं
वस्तु—वस्तुओं	भालू—भालुओं

विभक्ति की अशुद्धियाँ

हिन्दी में कई विभक्तियों का प्रयोग होता है, जैसे—ने, का, को, की, में आदि।

कुछ लोग विभक्तियों को शब्दों से अलग लिखते हैं, जैसे—राम का, उस ने, उस में आदि।

अन्य लोग विभक्तियों को मिलाकर लिखते हैं, जैसे—रामका, उसने, उसमें आदि।

संस्कृत तथा कई प्रान्तीय भाषाओं में विभक्तियाँ शब्दों के साथ मिलकर लिखी जाती हैं इसलिए हिन्दी में भी यदि ऐसा ही किया जाए तो अधिक उपयुक्त होगा।

सन्धि सम्बन्धी अशुद्धियाँ

यदि छात्र-छात्राएँ स्वर सन्धि, व्यंजन सन्धि तथा विसर्ग सन्धि सम्बन्धी नियमों को ध्यान में रखेंगे तो सन्धि की अशुद्धियों का निराकरण जल्दी हो सकता है।

प्रत्यय की अशुद्धियाँ

ऐसा देखा गया है कि बहुधा छात्र-छात्राएँ प्रत्यय के प्रयोग में भूल कर जाते हैं। यदि वे अधोलिखित नियमों का ध्यान रखेंगे तो उन्हें इस सम्बन्ध में कोई कठिनाई न होगी—

(i) विशेषण शब्दों के बाद विशेषार्थक प्रत्ययों का प्रयोग नहीं करना चाहिए। उदाहरणस्वरूप—अपेक्षाकृत, एकत्रित, प्रफुल्लित, पूज्यनीय, अभीष्ठित आदि प्रयोग युक्तिसंगत नहीं। इसके स्थान पर अपेक्षित, एकत्र, प्रफुल्ल, पूज्य, अभीष्ट आदि शब्दों का प्रयोग शुद्ध है।

(ii) 'त' अक्षर से समाप्त होने वाले शब्दों के अन्त में 'त्व' प्रत्यय जोड़कर जब भाववाचक संज्ञा बनती है तो छात्र-छात्राएँ उसे लिखने में गलती कर जाते हैं, यथा—

महत् + त्व = महत्व।

परन्तु वे इसे 'महत्व' ही लिखते हैं जो युक्तिसंगत नहीं है।

(iii) भाव प्रत्ययान्त शब्दों के पश्चात् प्रत्यय लगाना अशुद्ध है, यथा—

शुद्ध	अशुद्ध
सौन्दर्य	सौन्दर्यता
आलस्य	आलस्यता
पुरुषत्व	पुरुषत्वता

(iv) बहुब्रीहि समास वाले पदान्त में प्रत्यय लगाना अनुपयुक्त है, यथा—

शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध
सुकेशी	सुकेशिणी	गौरांगी	गौरांगिणी
अनाथा	अनाथिनी		

(v) जिस शब्द के अन्त में 'य' हो, वहाँ पर 'ई' के स्थान पर 'यी' का प्रयोग ही शुद्ध है, यथा—

शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध
अजयी	अजई	विजयी	विजई
नायिका	नाइका	गायिका	गाइका

अन्य सामान्य अशुद्धियाँ

(क) एक व्यंजन में एक समय में दो मात्रायें नहीं लगानी चाहिए, यथा—कृि लिखना अशुद्ध है।

(ख) खड़ी पाई वाले वर्ण जब अन्य वर्णों से मिलते हैं तो मध्य वर्ग की खड़ी पाई का लोप हो जाता है, यथा—सौम्य, काम्य, काव्य, भ्रान्त, शान्त आदि।

(ग) व्यंजन से पूर्व के स्वर का रूप नहीं बदलता। व्यंजन के बाद वाले स्वर का रूप ही बदलता है।

(घ) दो या दो से अधिक व्यंजनों के मध्य में स्वर न होने पर दो व्यंजन संयुक्त होकर संयुक्ताक्षर हो जाते हैं, यथा—दालबाटी, दालमोठ, खानपान आदि।

(ङ) 'र' के साथ जब 'उ' या 'ऊ' की मात्रा लगेगी तो उसका रूप 'रु' या 'रू' न होकर 'रु' अथवा 'रू' हो जायेगा।

(च) ङ, ञ, ण, न, म का संयोग केवल अपने वर्ग के व्यंजनों से ही होता है, यथा—

ङ—गङ्गा, नङ्गा, रङ्गा, अङ्क आदि।

ञ—अञ्जन, मञ्जन, रञ्जन, कञ्चन आदि।

ण—ठण्डा, मुण्ड, कण्ठ, ताण्डव आदि।

न—शान्त, भ्रान्त, धन्धा, मन्दा, पन्थ आदि।

म—निकम्मा, जगदम्बा, पम्पा, गम्भीर, चम्पा इत्यादि।